मासिक पत्र-जून 2020 (आषाढ़ मास) अंक-2

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
हरिद्वार

।। गावो विश्वस्य मातरः ।।
श्रीकृष्णायन

गोमूत्र कोरोना संक्रमण से बचाव में संजीवनी साबित हो सकता है

मौजूदा दौर में कोरोना यानी कोविड-19 एक महामारी बनकर समस्त जगत के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। जहां विश्व के बड़े-बड़े देश और उनकी वैज्ञानिक व चिकित्सीय शोध संस्थाएं इसकी प्रभावी वैक्सीन नहीं खोज पाए हैं, वहीं सदियों से अपने लाभदायक गुणों के लिए मशहूर पंचगव्यों में से एक गोमूत्र को लेकर आशा जगी है यह कोरोना संक्रमण से बचाव में संजीवनी साबित हो सकता है।

वैसे तो गोमूत्र के गुणकारी होने के प्रमाण सर्वविदित हैं लेकिन इससे कोरोना से बचा जा सकता है, ऐसा कोई प्रमाण अभी तक सामने नहीं आया है। हालांकि मेडिकल साइंस में गोमूत्र पर की गई रिसर्च में इसके हैल्थ बेनिफिट्स को साबित किया है। इस बारे में अमेरिका के नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ, भारत सरकार के आयुष मंत्रालय एवं इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्मेसी एंड फार्मास्युटिकल साइंसेज में प्रकाशित शोध में देशी गोमूत्र को कई गंभीर और सामान्य बीमारियों के लिए फायदेमंद बताया गया है।

लेकिन इस दिशा में राहत पहुंचाने वाली सबसे बड़ी बात यह है कि भारत

अब देशी गाय के पंचगव्य और आयुर्वेद से बनी दवा के साथ कोरोना पॉजिटिव मरीजों पर क्लीनिकल ट्रायल करने जा रहा है।

राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के अध्यक्ष डॉक्टर वल्लभ कथीरिया का कहना है कि पहली बार भारत देशी गाय के पंचगव्य से बनी दवा के साथ कोरोना पॉजिटिव मरीजों पर क्लीनिकल ट्रायल करने जा रहा है। गोमूत्र, दूध, दही, घी और खाद का उपयोग कर आयुर्वेदिक दवा तैयार की गई है। इस दवा के कोरोना हॉटस्पॉट बने अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा सहित दिल्ली, हैदराबाद, पुणे जैसे शहरों में क्लीनिकल परीक्षण किए जाएंगे। डॉक्टर वल्लभ कथीरिया ने बताया कि आयुर्वेद में कहा गया है कि गोमूत्र और गोबर कई रोगों में प्रभावी है। देशी गायों के दूध, घी, दही, गोबर और गोमूत्र से प्राप्त पांच मुख्य

पदार्थों का उल्लेख वेदों में पंचगव्य तत्व के रूप में किया गया है तथा सदियों से भारत में इसका उपयोग किया जाता रहा है।

बेहद लाभकारी है गोमूत्र

आयुर्वेद की मानें तो गोमूत्र अपने-आप में एक दवा की तरह है, आयुर्वेद

कहता है कि अगर गोमूत्र में कुछ और जड़ी-बूटियां मिला दी जाएं तो इसका असर कई गुना बढ़ जाता है। इतना ही नहीं गोमूत्र व्यक्ति के इम्यून सिस्टम को भी बढ़ाता है लेकिन तब जब उसे दवाओं में शामिल करके इस्तेमाल में लाया जाए। इस दौरान यह ध्यान रखना होगा कि गोमूत्र किसी स्वस्थ देशी गाय का ही हो और वह गर्भवती, बूढ़ी या बीमार न हो। इसके अलावा गोमूत्र का इस्तेमाल करने से पहले उसे कपड़े की कई परतों से अच्छी तरह छान लेना बेहद जरूरी है। सबसे जरूरी बात यह है कि किसी भी नुस्खे का इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर की सलाह जरूर ली जाए।

पंचगव्य के चमत्कारी गुण

देशी गाय से प्राप्त पांच गव्यों के मिश्रण को 'पंचगव्य' कहा जाता है। संघटन की दृष्टि से देशी गाय का दूध माता के दूध के समकक्ष होता है। मनुष्य की आहारनली जितनी आसानी से देशी गाय का दूध पचा लेती है उतनी आसानी से भैंस के दूध को नहीं पचा पाती। इसीलिए देशी गाय का दूध ही रोगी, वृद्ध तथा बच्चों को दिया जाना उचित माना गया है। वहीं भैंस के दूध से कब्जियत हो सकती है। इसीलिए पंचगव्य में गोमाता के दूध, दही और घी का प्रयोग किया जाता है।

गोमाता का दूध पीने से मस्तिष्क तथा तंत्रिका-तंत्र की कोशिकाओं की बढ़त, रख-रखाव तथा मरम्मत होती है। ज़िंदगी भर गो दुग्ध पान करने वालों को कैंसर तथा खासतौर पर माताओं और बहनों को स्तन कैंसर नहीं होता। देशी गाय का दूध अन्य प्राणियों के दूध से अधिक गुणकारी होता

वैज्ञानिक विश्लेषण

आधुनिकता एवं पश्चिमी देशों के प्रभाव में आकर आज हमने पंचगव्य की महिमा को बिलकुल नकार दिया है। इसके परिणाम हमारे सामने हैं। अगर हमें ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार तथा आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना है, तो आवश्यकता है पंचगव्य एवं गोवंश के महत्व को समझा जाए। इसके लिए हमें पंचगव्य एवं गोवंश के महत्व को समझकर उसके ग्रामीण क्षेत्रों में पुनः स्थापना के प्रयास करने होंगे ताकि एक नए ढंग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सके।

आज गोवंश एवं पंचगव्य के महत्व को सारे विश्व ने माना है। इसके कुछ प्रमाण, संक्षेप में इस प्रकार हैं:

- 1.हाल ही में अमेरिका ने गोमूत्र का पेटेंट नंबर 6410059 दिया है। पेटेंट का शीर्षक है, 'फार्मास्युटिकल कंपोजिशन कंटेनिंग काऊ-यूरीन डिस्टिलेट एंड एन एंटी-बायोटिक'।
- 2. गाय के दूध में रेडियो विकिरण (एटॉमिक रेडिएशन) से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है-शिरोविच रूसी वैज्ञानिक।
- 3.गोमूत्र एक सशक्त कीटनाशक है-यह एक अभि-प्रमाणित तथ्य है। कई किसानों ने भी इसे अपने खेतों में प्रयोग करके प्रमाण दिया है।
- 4.गोबर तथा उससे बने जैविक खाद धरती की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। गो-आधारित कृषि, रासायनिक कृषि से बेहतर है तथा अक्षय विकास का एकमात्र उपाय है। (किसानों द्वारा प्रमाण दिए गए हैं)
- 5.पंचगव्य चिकित्सा किडनी संबंधी बीमारियों, कैंसर, त्वचा संबंधी बीमारियों आदि में लाभदायक। (क्लिनिकल ट्रायल, आदर्श गोसेवा एवं अनुसंधान प्रकल्प, अकोला एवं गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, नागपुर)
- 6.माइटोसीन-सी जो एक सशक्त एंटी-ट्यूमर एजेंट है, डीएनए को छोटा कर देता है। इस पर गोमूत्र अर्क का लाभदायक असर देखा गया है। (गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, नागपुर)
- 7.गोधृत (घी) शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति को बढ़ाता है, घावों को जल्दी भरने में सहायक है तथा याददाश्त बढ़ाने में मदद करता है।
- 8.गोमूत्र में एंटी-माइक्रोबियल प्रोपर्टी भी है। (रोगाणु से लड़ने की क्षमता)
- 9.ऐसे और भी बहुत सारे प्रमाण हैं, जिसके आधार पर हम पंचगव्य के महत्व को साबित कर सकते हैं, जिन्हें यहां लिख पाना संभव नहीं है।

है। इसलिए 'पंचगव्य' में देशी गाय के दूध का प्रयोग होता है।

डॉक्टर ई. वैडीवेल के एक शोध के अनुसार, चारा, दाना और पानी के साथ जो विषाक्त पदार्थ गोमाता खाती है उसे वह कभी भी अपने दूध, मूत्र या गोबर के माध्यम से बाहर नहीं निकालती, जबकि बकरी, भैंस तथा सभी पशु विषाक्त पदार्थों को दूध, मूत्र तथा गोबर से बाहर निकाल देते हैं। उक्त प्रक्रिया के कारण गाय का दूध, मूत्र तथा गोबर पवित्र, पोषक तथा औषधीय गुणों से युक्त माना गया है। जल, पृथ्वी, वायु, आकाश और अग्नि से पंच महाभूत शरीर की रचना होती है। पांचों तत्व सभी प्राणियों में भिन्न-भिन्न मात्रा में पाए जाते हैं, लेकिन देशी गोमाता के शरीर में पांचों तत्व संतुलित मात्रा में पाए जाते हैं इसलिए देशी गाय में दैविक शक्ति अधिक होती है।

वैदिक ग्रंथों के अनुसार, गोमाता के शरीर में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास माना गया है। मान्यताओं के अनुसार गोबर में लक्ष्मी, गोमूत्र में गंगा तथा दूध में सरस्वती का वास होता है। इसीलिए कहा जाता है कि गो दुग्ध के सेवन से बुद्धि तीव्र होती है। दूसरे अर्थों में गो दुग्ध में सोम, दही में वायु, गोबर में अग्नि तथा गोमूत्र में वरुण देव का वास माना गया है। अतः गाय का दूध, मूत्र तथा गोबर दिव्य शक्तियों वाले माने जाते हैं।

'पंचगव्य प्राशनम् महापातक नाशनम्'

पंचगव्य को सर्व-रोगहारी माना गया है। अलग-अलग रूपों में प्रत्येक गव्य त्रिदोष नाशक नहीं हैं। परंतु पंचगव्य के रूप में एकात्मक होने पर यह

गोबर से बना हैंडमेड पेपर

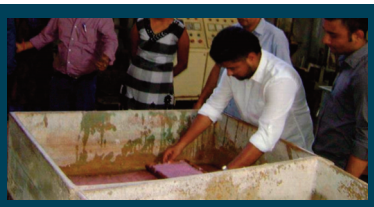

जयपुर स्थित कुमारप्पा नेशनल हैंडमेड पेपर इंस्टीट्यूट (केएनएचपीआई) के डायरेक्टर ए.के. गर्ग ने बताया कि गाय के गोबर से हैंडमेड पेपर तैयार किया जा रहा है। इस पेपर की क्वालिटी बहुत अच्छी है तथा इससे कैरी बैग बनाए जा रहे हैं। उनके अनुसार, प्लास्टिक बैग बैन होने की स्थिति में हैंडमेड पेपर से तैयार किए गए ये कैरी बैग अच्छा विकल्प साबित होंगे।

त्रिदोषनाशक हो जाता है। अतः त्रिदोष से उत्पन्न सभी रोगों की चिकित्सा पंचगव्य से संभव है।

पंचगव्य एक अच्छा प्रो-बायोटिक्स है। प्रो-बायोटिक्स रोग न उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर मनुष्य को उपयोगी किस्म का फ्लोरा उपलब्ध कराते हैं। प्रो-बायोटिक्स शरीर की व्याधियों को कम करके प्राणी की उत्पादन क्षमता, प्रजनन क्षमता ओज और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। पंचगव्य

एक अच्छा एंटी-ऑक्सीडेंट और एक अच्छा विषशोधक है। पंचगव्य में मौजूद घी विष शोधक का कार्य करता है। उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त पंचगव्य का प्रयोग रक्तचाप, शुगर, मिर्गी तथा अन्य बहुत से रोगों में भी लाभकारी है। इस प्रकार सर्वविदित है कि कैंसर जैसे रोगों के अलावा अन्य कई रोगों में भी 'पंचगव्य' की भूमिका महत्वपूर्ण है।

गोशाला की प्रमुख गतिविधियां

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति (हरिद्वार) की एक नई शाखा बनहारी (रानी घाट) में खुल गई है। करीब दस हजार देशी गोमाताओं की सेवा-क्षमता से लैस इस नई गोशाला के खुलने से अब और अधिक संख्या में देशी गायों की सेवा रक्षा की जा सकेगी।

उपलब्धियां

गोमाता के भोजन और पोषण के लिए इस बार तीन सौ टन भूसा खरीदा गया है ताकि देशी गोवंश को वर्ष भर पौष्टिक आहार मिलता रहे।

गोशाला के निकट रहने वाले निवासियों को इस आपातकाल के समय मुफ्त राशन का वितरण किया गया।

नई योजनाएं हुईं साकार

- उत्तराखंड में पिली पड़ाव गोशाला
- रानीघाटी में बन्हेरी गोशाला
- गैंडीखाता, हरिद्वार में दो हजार देशी गायों के बैठने के लिए टीनशेड की व्यवस्था।

सभी दानदाताओं से अपील

कोराना वायरस की इस महामारी का असर सभी लोगों पर हुआ है। अर्थव्यवस्था से लेकर कामकाज तक पर इसका व्यापक असर हुआ है। इसके असर से सभी प्राणी प्रभावित हैं। हजारों गोमाताओं की सेवा के लिए जो दान आप दानवीरों द्वारा किया जा रहा था, वह इस समय अति-आवश्यक है। क्योंकि गोरक्षकों और गोमाताओं के भोजन का निर्वाह करना भी जरूरी है। हमारी आप सभी प्रबुद्धजनों और दानवीरों से यही अपील है कि संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करके सुरक्षित रहें और दान करते रहें क्योंकि संकट में दान देने वालों का प्रभू भी साथ देता है।

इस समय हमें आपके सहयोग की अति-आवश्यकता है आप आगे बढ़कर अपने पहचान वालों को भी गोसेवा करने के लिए प्रोत्साहित करें कम से कम एक गोमाता की सेवा का संकल्प लेकर ईसीएस फार्म भरकर मासिक/वार्षिक अपना सहयोग दें।

अन्य शाखाएं

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)
ज़िला-हरिद्वार, उत्तराखंड
पिन कोड-246663

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,
जिला - हरिद्वार

बायो-सीएनजी प्लांट
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,
जिला - हरिद्वार
khad@krishnayangauraksha.org

गांव-सबलगढ़ (भागूवाला)
जिला - बिजनौर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-246732

आदर्श गोशाला
लाल टिपारा , ग्वालियर,
मध्य प्रदेश
पिन कोड-474006

स्वामी ईश्वर दास जी महाराज
(अध्यक्ष)
मोबाइल: 9412902268

स्वामी गणेशानंद जी महाराज
(सचिव)
मोबाइल: 8958942681